उत्तम आर्जव धर्म पूजा

(वेसरी छन्द)

जग परपंच रहित जे भावा, सरल चित्त सबतैं निरदावा ।
तिनको आरजव भाव सु कहिये, सो ह्यां थापि पूजफल लहिये ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमआर्जवधर्मांग ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सतिहितो भव भव वषट् ।

अथाष्टकम्

(वेसरी छन्द)

क्षीर समुद का उज्वल नीरा, कनक पियाले धर अति धीरा ।
जरा रोग नाशन को भाई, आरजव भाव नमौं शिर नाई ।।२।।

ॐ ह्रीं श्री आर्जवधर्मांगाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।

चन्दन बावन जल घसि लाया, कनक पात्र में धरि उमगाया ।
शोकानल तप नाशन भाई, आरजव धर्म जजौं शिर नाई ।।३।।

ॐ ह्रीं श्री आर्जवधर्मांगाय संसारतापविनाशनाय चन्दनं ।

अक्षत मुक्ताफलसे जानो, उज्वल खण्ड विवर्जित आनो ।
क्षय नहिं होय इसो पद दाई, आरजव भाव नमौं शिर नाई ।।४।।

ॐ ह्रीं श्री आर्जवधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तयेऽक्षतान् ।

फूल सुगंध कल्पद्रुम लाया, तथा सुवर्ण रजतमय भाया ।
तिनकी माल गूंथि करि लाई, आरजव भाव नमौं शिर नाई ।।५।।

ॐ ह्रीं श्री आर्जवधर्मांगाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ।

नाना रस नैवेद्य करावै, मोदक आदि भक्ति तैं लावै ।
भूख व्याधि नाशन को भाई, आरजव भाव नमौं शिर नाई ।।६।।

ॐ ह्रीं श्री आर्जवधर्मांगाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ।

दीपक रतन थल धरि लीजै, मन वच काय शुद्ध करि लीजै ।
घाति अज्ञान ज्ञान दर्शाई, आरजव धर्म जजौं शिर नाई ।।७।।

ॐ ह्रीं श्री आर्जवधर्मांगाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं ।

धूप अगरजा चन्दन भीनी, गंध सहित निज करमें लीनी ।
कर्मदहन को अगनि जराई, आरजव भाव नमौं शिर नाई ।।८।।

ॐ ह्रीं श्री आर्जवधर्मांगाय दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं ।

ले नारियल बादाम सुपारी, खारिक लोंग आदि हितकारी ।
सिद्धलोक वांछा मनमांही, आरजव धर्म जजौं शिर नाई ।।९।।

ॐ ह्रीं श्री आर्जवधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं ।

जल चन्दन अक्षत कामारी, चरु दीपक फल धूप विथारी ।
अर्घ लेय मन वच तन भाई, आर्जव धर्म जजौं शिर नाई ।।१०।।

ॐ ह्रीं श्री आर्जवधर्मांगाय अनर्ध्यपदप्राप्तयेऽर्घं ।

अथ प्रत्येकार्घाणि

(वेसरी छन्द)

गुण छ्यालीय जहां प्रभु मेरा, अष्टादश तहां दोष न हेरा ।
तिन पद सरल भाव शिर नावै, सो आरजव वृष जजि शिव धावै ।।

ॐ ह्रीं श्री छयालीसगुणसहितजिनचरणनमनार्जवधर्मांगायार्घं ।

मुक्त जीव अरहत थुति कीजे, मन वच कुटिल भाव तजि दीजे ।
तिन पद सरल भाव शिर नावै, सो आरजव वृष जजि शिव धावै ।२।

ॐ ह्रीं श्री मुक्तजीवअरहन्तपदनमनार्जवधर्मांगायार्घं ।

कर्म काटि शिवलोक सिधारे, सिद्ध सु देव हरो अघ सारे ।
तिन पद सरल भाव शिव नावै, सो आरजव वृष जजि शिव धावै ।३

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपदनमनार्जवधर्मांगायार्घं ।

सिद्धशिला पैंतालिस लाखा, योजन विस्तृत जिन वच भाषा ।
तत्र स्थित आतम शिर नावै, सो आरजव वृष जजि शिव धावै ।४।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धशिलास्थितमुक्तात्मपदनमनार्जवधर्मांगायार्घं ।

गुण छत्तीस सु धारक सूरा, आचारज सब गुण भरपूरा ।
तिन पद सरल भाव शिर नावै, सो आरजव वृष जजि शिव धावै ।५

ॐ ह्रीं श्री आचार्यपदनमनार्जवधर्मांगायार्घं ।

आचारज सब गुण भरपूरा, आचारादि गुणनयुत दूरा ।
तिन पद सरलभाव शिर नावै, सो आरजव वृष जजि शिव धावै ।६

ॐ ह्रीं श्री आचार्यपदपरोक्षनमनार्जवधर्मांगायार्घं ।

गुण पचीस उवझाय सु माहीं, ग्यारह अंग चौदह पुरवाहीं ।
तिन पद सरलभाव शिर नावै, सो आरजव वृष जजि शिव धावै ।७

ॐ ह्रीं श्री उपाध्यायपदनमनार्जवधर्मांगायार्घं ।

बहु गुण धर उवझाय सु जानौ, दूरहितैं तिन को चित आनो ।
तिन पद सरलभाव शिर नावै, सो आरजव वृष जजि शिव धावै ।८

ॐ ह्रीं श्री उपाध्यायपदपरोक्षनमनार्जवधर्मांगायार्घं ।

वीस आठ गुण साधन साधा, सो नहिं लहै जगत की बाधा ।
तिन पद सरलभाव शिर नावै, सो आरजव वृष जजि शिव धावै ।९।

ॐ ह्रीं श्री साधुपदनमनार्जवधर्मांगायार्घं ।

दूरहि तैं मुनि गुण जु चितारैं, मन वच काया निज वश धारै ।
तिन पद सरलभाव शिर नावै, सो आरजव वृष जजि शिव धावै ।१०

ॐ ह्रीं श्री साधुपदपरोक्षनमनार्जवधर्मांगायार्घं ।

वरण विहीन सु जिनवर वानी, तिन को सुनि सुख पावै प्रानी ।
तिन पद सरलभाव शिर नावै, सो आरजव वृष जजि शिव धावै ।११

ॐ ह्रीं श्री जिनधुनिनमनार्जवधर्मांगायार्घं ।

अतिशय क्षेत्र सु तीरथ ठामा, यात्रीगण कहे पूरै कामा ।
तिस थल सरलभाव शिर नावै, सो आरजव वृष जजि शिव धावै ।।

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्रपदनमनार्जवधर्मांगायार्घं ।

शिखर सम्मेद आदि सिद्ध थाना, तहं मुनि लिय शिव कर्म नशाना ।
तिन पद सरलभाव शिर नावै, सो आरजव वृष जजि शिव धावै ।
१ ३

ॐ ह्रीं श्री सिद्धक्षेत्रपदनमनार्जवधर्मांगायार्घं ।

विगर किये जिनबिम्ब अनूपा, लक्षण चिह्न जानि जिनरूपा ।
तिन पद सरलभाव शिर नावै, सो आरजव वृष जजि शिर धावै ।१४

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिमजिनचैत्यपदनमनार्जवधर्मांगायार्घं ।

कृत्रिम जे जिनबिम्ब विराजैं, विनय सहित पुन दायक छाजैं ।
तिन पद सरलभाव शिर नावै, सो आरजव वृष जजि शिव धावै ।१५

ॐ ह्रीं श्री कृत्रिमजिनचैत्यपदनमनार्जवधर्मांगायार्घं ।

इत्यादिक बहु क्षेत्र सु थाना, पूजनीक तीरथ अघ हाना ।
जिनपद सरलभाव शिर नावै, सो आरजव वृष जजि शिव धावै ।१६

ॐ ह्रीं श्री सकलपूज्यस्थानकपदनमनार्जवधर्मांगायार्घं ।

अथ जयमाला

(दोहा)

सरल भाव सारै सरस, सुरनर पूज्य महान ।
तातैं तजनी कुटिलता, आरजव भाव लहान ।।१।।

(वेसरी छन्द)

सरलभाव समता उर आनै, सरलभाव सब औगुन भानै ।
आरजव भाव धरै जे जीवा, तिनने जिनवानी रस पीवा ।।२।।
आरजव भाव धरैं जे प्राणी, तिनके होनहार शिवरानी ।

दोष भाव तिनतें नहिं छीवा, आरजव भाव धरैं जे जीवा ।।३।।

आरजव भाव अमरपद द्यावै, आरजव में औगुन नहिं पावै ।
कुटिलभाव विष जिन नहिं पीवा, आरजवभाव धरैं जे जीवा ।।४।।

आरतिको आरजव ही खोवै, आरजवभाव पाप मल धोवै ।
रोग शोक ताको नहिं छीवा, आरजवभाव धरैं जे जीवा ।।५।।

आरजव शुद्धभाव जिन पाया, तिनने लहि पुन पाप गमाया ।
अनुभव आनंद तानें छीवा, आरजवभाव धरैं जे जीवा ।।६।।

आर्जव भाव दोष सब खोवै, आरजव कर्म कालिमा धोवै ।
शुद्ध स्वभाव सु तानै कीया, आरजवभाव धरैं जे जीवा ।।७।।

आरजवभाव सकल को प्यारा, आरजवभाव भ्रमणतैं न्यारा ।
ताकों और रुचे न मतीवा, आरजवभाव धरैं जे जीवा ।।८।।

आरजव सुर शिवके सुख ठाने, आरजवभाव पूर्व अघ भाने ।
अद्भुत आपापर भिन कीया, आरजवभाव धरैं जे जीवा ।।९।।

(दोहा)

अन्तरंग निरदोषके, प्रगटै आरजव भाव ।
जाके फल मरनौ मिटै, छुटे कर्मको दाव ।।१०।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमआर्जवधर्मांगाय पूर्णार्घं ।

❀ इति उत्तम आर्जव धर्म पूजा समाप्त ❀

दशलक्षण धर्म पूजन

(पं. द्यानतरायजी कृत)

(अनुष्टुप) स्थापना (संस्कृत)

उत्तमक्षान्तिकाद्यन्त-ब्रह्मचर्य-सुलक्षणम् ।
स्थापय दशधा धर्ममुत्तमं जिनभाषितम् ।।

(अडिल्ल) स्थापना (हिन्दी)

उत्तम क्षमा मारदव आरजव भाव हैं,
सत्य शौच संयम तप त्याग उपाव हैं।
आकिंचन ब्रह्मचर्य धरम दश सार हैं,
चहुँगति-दुखतैं काढ़ि मुकति करतार हैं ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

(सोरठा)

हेमाचल की धार, मुनि-चित सम शीतल सुरभि।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्येति दशलक्षणधर्माय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दन केशर गार, होय सुवास दशों दिशा।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि. स्वाहा ।

अमल अखण्डित सार, तन्दुल चन्द्र समान शुभ।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि. स्वाहा ।

फूल अनेक प्रकार, महकें ऊरध-लोकलों।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय कामबाणविनाशनाय पुष्पं नि. स्वाहा ।

नेवज विविध निहार, उत्तम षट्-रस-संजुगत।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा ।

बाति कपूर सुधार, दीपक-ज्योति सुहावनी।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि. स्वाहा।

अगर धूप विस्तार, फैले सर्व सुगन्धता।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि. स्वाहा।

फल की जाति अपार, घ्रान-नयन-मन-मोहने।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि. स्वाहा।

आठों दरब सँवार, 'द्यानत' अधिक उछाहसौं।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अंग-अर्घ्य

(सोरठा)

पीड़ैं दुष्ट अनेक, बाँध मार बहुविधि करैं।
धरिये छिमा विवेक, कोप न कीजै पीतमा।।

उत्तम छिमा गहो रे भाई, इह-भव जस, पर भव सुखदाई।
गाली सुनि मन खेद न आनो, गुन को औगुन कहै अयानो।।
कहि है अयानो वस्तु छीनै, बाँध मार बहुविधि करै।
घर तैं निकारै तन विदारै, वैर जो न तहाँ धरै।।
ते करम पूरब किये खोटे, सहै क्यों नहिं जीयरा।
अति क्रोध-अगनि बुझाय प्रानी, साम्य-जल ले सीयरा।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान महाविषरूप, करहि नीच-गति जगत में।
कोमल सुधा अनूप, सुख पावै प्रानी सदा।।

उत्तम मार्दव गुन मन-माना, मान करन को कौन ठिकाना।
बस्यो निगोद माहिं तैं आया, दमरी रूँकन भाग बिकाया।।

रूँकन बिकाया भाग वशतैं, देव इक-इन्द्री भया।
उत्तम मुआ चाण्डाल हूवा, भूप कीड़ों में गया।।
जीतव्य जोवन धन गुमान, कहा करै जल-बुदबुदा।
करि विनय बहु-गुन बड़े जन की, ज्ञान का पावै उदा।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कपट न कीजै कोय, चोरन के पुर ना बसै।
सरल सुभावी होय, ताके घर बहु-सम्पदा।।

उत्तम आर्जव रीति बखानी, रंचक दगा बहुत दुखदानी।
मन में होय सो वचन उचरिये, वचन होय सो तन सौं करिये।।
करिये सरल तिहुँ जोग अपने देख निरमल आरसी।
मुख करै जैसा लखै तैसा, कपट-प्रीति अँगार-सी।।
नहिं लहै लछमी अधिक छल करि, करम-बन्ध विशेषता।
भय त्यागि दूध बिलाव पीवै, आपदा नहिं देखता।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम-आर्जवधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धरि हिरदै सन्तोष, करहु तपस्या देह सों।
शौच सदा निर्दोष, धरम बड़ो संसार में।।

उत्तम शौच सर्व जग जाना, लोभ पाप को बाप बखाना।
आशा-पास महा दुखदानी, सुख पावै सन्तोषी प्रानी।।
प्रानी सदा शुचि शील जप तप, ज्ञान ध्यान प्रभावतैं।
नित गंग जमुन समुद्र न्हाये, अशुचि-दोष सुभावतैं।।
ऊपर अमल मल भर्‌यो भीतर, कौन विधि घट शुचि कहै।
बहु देह मैली सुगुन-थैली, शौच-गुन साधू लहै।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमशौचधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कठिन वचन मति बोल, पर-निन्दा अरु झूठ तज।
साँच जवाहर खोल, सतवादी जग में सुखी।।

उत्तम सत्य-बरत पालीजै, पर-विश्वासघात नहिं कीजै।
साँचे-झूठे मानुष देखो, आपन पूत स्वपास न पेखो।।
पेखो तिहायत पुरुष साँचे को दरब सब दीजिये।
मुनिराज-श्रावक की प्रतिष्ठा, साँच गुण लख लीजिये।।

ऊँचे सिंहासन बैठि वसु नृप, धरम का भूपति भया।
वच झूठ सेती नरक पहुँचा, सुरग में नारद गया।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमसत्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काय छहों प्रतिपाल, पंचेन्द्रिय मन वश करो।
संजम-रतन सँभाल, विषय-चोर बहु फिरत हैं।।

उत्तम संजम गहु मन मेरे, भव-भव के भाजैं अघ तेरे।
सुरग-नरक-पशुगति में नाहीं, आलस-हरन करन सुख ठाँ हीं।।
ठाहीं पृथीवी जल आग मारुत, रूख त्रस करुना धरो।
सपरसन रसना घ्रान नैना, कान मन सब वश करो।।
जिस बिना नहिं जिनराज सीझे, तू रुल्यो जग-कीच में।
इक घरी मत विसरो करो नित, आयु जम-मुख बीच में।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमसंयमधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप चाहैं सुरराय, करम-शिखर को वज्र है।
द्वादशविधि सुखदाय, क्यों न करै निज सकतिसम।।

उत्तम तप सब माहिं बखाना, करम-शैल को वज्र-समाना।
बस्यो अनादि निगोद मँझारा, भू विकलत्रय पशु तन धारा।।
धारा मनुष तन महादुर्लभ, सुकुल आयु निरोगता।
श्रीजैनवानी तत्त्वज्ञानी, भई विषय-पयोगता।।
अति महा दुरलभ त्याग विषय-कषाय जो तप आदरैं।
नर-भव अनूपम कनक घर पर, मणिमयी कलसा धरैं।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमतपोधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दान चार परकार, चार संघ को दीजिए।
धन बिजुली उनहार, नर-भव लाहो लीजिए।।

उत्तम त्याग कह्यो जग सारा, औषध शास्त्र अभय आहारा।
निहचै राग-द्वेष निरवारै, ज्ञाता दोनों दान सँभारै।।
दोनों सँभारै कूप-जल सम, दरब घर में परिनया।
निज हाथ दीजे साथ लीजे, खाय खोया बह गया।।

धनि साध शास्त्र अभय दिवैया, त्याग राग विरोध को।
बिन दान श्रावक साधु दोनों, लहैं नाहीं बोध को।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमत्यागधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिग्रह चौबिस भेद, त्याग करैं मुनिराजजी।
तिसना भाव उछेद, घटती जान घटाइए।।
उत्तम आकिंचन गुण जानो, परिग्रह-चिन्ता दुख ही मानो।
फाँस तनक-सी तन में सालै, चाह लँगोटी की दुख भालै।।
भालै न समता सुख कभी नर, बिना मुनि-मुद्रा धरैं।
धनि नगन पर तन-नगन ठाड़े, सुर-असुर पायनि परैं।।
घर माहिं तिसना जो घटावे, रुचि नहीं संसार सौं।
बहु धन बुरा हू भला कहिये, लीन पर-उपगार सौं।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमाकिंचन्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शील-बाढ़ नौ राख, ब्रह्म-भाव अन्तर लखो।
करि दोनों अभिलाख, करहु सफल नर-भव सदा।।
उत्तम ब्रह्मचर्य मन आनौ, माता बहिन सुता पहिचानौ।
सहैं बान-वरषा बहु सूरे, टिकै न नैन-बान लखि कूरे।।
कूरे तिया के अशुचि तन में, काम-रोगी रति करैं।
बहु मृतक सड़हिं मसान माहीं, काग ज्यों चोंचैं भरैं।।
संसार में विष-बेल नारी, तजि गये जोगीश्वरा।
'द्यानत' धरम दश पैड़ि चढ़ि कै, शिव-महल में पग धरा।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

दश लच्छन वन्दौं सदा, मनवांछित फलदाय।
कहों आरती भारती, हम पर होहु सहाय।।

(चौपाई)

उत्तम छिमा जहाँ मन होई, अन्तर-बाहिर शत्रु न कोई।
उत्तम मार्दव विनय प्रकासे, नाना भेद ज्ञान सब भासे।।
उत्तम आर्जव कपट मिटावे, दुरगति त्यागि सुगति उपजावे।
उत्तम शौच लोभ-परिहारी, सन्तोषी गुण-रतन भण्डारी।।
उत्तम सत्य-वचन मुख बोले, सो प्रानी संसार न डोले।
उत्तम संजम पाले ज्ञाता, नर-भव सफल करै, ले साता।।
उत्तम तप निरवांछित पाले, सो नर करम-शत्रु को टाले।
उत्तम त्याग करे जो कोई, भोगभूमि-सुर-शिवसुख होई।।
उत्तम आकिंचन व्रत धारे, परम समाधि दशा विसतारे।
उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावे, नर-सुर सहित मुकति-फल पावे।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्येति दशलक्षणधर्माय जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

करै करम की निरजरा, भव पींजरा विनाशि।
अजर अमर पद को लहैं, 'द्यानत' सुख की राशि।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

देखो जी आदीश्वर स्वामी, कैसा ध्यान लगाया है।
कर ऊपर कर सुभग विराजै, आसन थिर ठहराया है।।टेक.।।
जगत विभूति भूति सम तजकर, निजानन्द पद ध्याया है।
सुरभित श्वासा आशा वासा, नासा दृष्टि सुहाया है।।१।।
कंचन वरन चले मन रंच न सुर-गिरि ज्यों थिर थाया है।
जास पास अहि मोर मृगी हरि, जाति विरोध नशाया है।।२।।
शुध-उपयोग हुताशन में जिन, वसुविधि समिध जलाया है।
श्यामलि अलकावलि सिर सोहे, मानो धुआँ उड़ाया है।।३।।
जीवन-मरन अलाभ-लाभ जिन सबको नाश बताया है।
सुर नर नाग नमहिं पद जाके ''दौल'' तास जस गाया है।।४।।